सूरह फातिहा – 1

बाज़ मुफस्सिरीन ने कहा ये सूरत मक्की है और बाज़ मुफस्सिरीन ने कहा ये सूरत मदनी है और बाज़ ने कहा ये सूरत दो मरतबा नाज़िल हुई|मुसहफ ए मदीना के मुताबिख ये सूरत मक्की है|

सूरह निसा – 4

ये सूरत मदनी है

Disclaimer:

Arshad Basheer madani ke urdu books ko Roman English mai lane wale ahbab Mubarakbadi ke mustahiq hai ke unoun ne asan kia urdu reading Na janne Waloun ke liye

الحمد لله

فجزاكم الله خيرا

Note : arshad basheer madani ne Word to Word check nahi kia Kiunke bohut books ko roman Kia gaya un sab ko Check karna asan nahi, time ka commitment deegar Urdu books Aur syllabus par laga huva hai is liye badi mazirat ke sat arz hai ke jahan kahin apko pronunciation ya talaffuz mai Diqqat lage Urdu Janne Waloun se asal Kitab ki taraf rujoo farmaen in sha Allaah in sha Allaaah

Askislampedia ki Team ka shukriya ke Roman mai book lane mai madad faramee

Khas tour se

Riaz bhai , shaikh abdullah Umeri, faheem iqbal , Mushtaq ahmed Aur baz sisters bhi hain jo madad kie Aur kuch brothers bhi madad kie Likin ijazat nahi hai ke unka naam zikr Kia jae Allaah qabool farmae sab ki mahant

****

Ameen

Shukriya

Shoba e nashro ishaat,

Askislampedia

बाज़ अहदाफ

- सारी आसमानी किताबों का खुलासा सूरह फातिहा में बयान कर दिया गया है| 1
- बाज़ उलेमा ने इस सूरत के नाम उम्मुल किताब और उम्मुल कुरआन की ये भी एक वजह बताई है| 2
- कुरआन की तालीमात (1) अखीदह, (2) इबादत, (3) तर्ज़े ज़िन्दगी, (4) नेक व बद लोगों के किरदार और उनके अंजाम के खिस्सों पर मुश्तमिल है और ये सारी बातें सूरतुल फातिहा में बयान की गयी है, जैसा के इमाम सुयूती रहिमहुल्लाह ने तफसीर सूरतुल फातिहा में वज़ाहत करते हुए कहा: सारा कुरआन उमूमी तौर पर चार उलूम की वज़ाहत करता है| और इमाम सुयूती ने इसको बरातुल इस्तेह्लाल, यानी हुस्ने आग़ाज़ का नाम दिया है|

  अखीदह: ----------

  - इबादत: ----------
  - तर्ज़े ज़िन्दगी:
  - खिसस बराये इबरत, मोइज़ात, तज़कीर व तज़किया:
    - आम तौर पर इन्सान के ज़हन में उभरने वाले 6 सवालात और सूरतुल फातिहा के पसे मंज़र में इसके जवाबात:

      सवाल नंबर 1) मै कौन हूँ?

      मै अब्दुल्लाह हूँ, अल्लाह का बंदा, मुझे अल्लाह ही की बंदगी करना है| (----------)

      सवाल नंबर 2) मुझे किसने पैदा किया?

      मुझे अल्लाह ने पैदा किया| (----------)

      सवाल नंबर 3) मुझे मरने के बाद कहाँ जाना है? मरने के बाद मेरा क्या होगा?

      मुझे मरने के बाद बरज़ख का सामना है फिर उसके बाद हशर में हिसाब व किताब होगा| (----------)

      सवाल नंबर 4) मुझे क्या करना है? किसकी इबादत करना है? और कैसे इबादत करना है?

      मुझे अल्लाह ही की इबादत करना है, नबी ﷺ के बताये हुए तरीखे के मुताबिख| (----------)

      इब्ने तैमियह रहिमहुल्लाह फरमाते है पूरा इस्लाम इन दो सवालों के जवाब में है:

      1. तुम किसकी इबादत करोगे?
         - जवाब है अल्लाह ही की इबादत|
      2. इस एक अल्लाह की इबादत और ज़िन्दगी के हर शोबे में उसकी इबादत व बंदगी कैसे करोगे?

- जवाब है मुहम्मद ﷺ के बतलाये हुए तरीखे के मुताबिख| 3
  (----------)

  सवाल नंबर 5) मुझे क्या नहीं करना है?
  (----------) 4

  सवाल नंबर 6) अल्लाह को राज़ी करने का तरीखा क्या है?
  अल्लाह की मुहब्बत पाने का तरीखा नबी ﷺ और सहाबा के मन्हज को इख्तियार करना है| (----------) 5

❖ इस सूरत को हर नमाज़ और नमाज़ की हर रकात में पढ़ा जाता है| (बुखारी:756, मुस्लिम:394) 6

❖ इस सूरत के कई नाम है:
अस सलाह, अल हम्द, फातिहतुल किताब, उम्मुल किताब, उम्मुल कुरआन, अस्हाबुल मसानी, अल कुरआनुल अज़ीम, अश शिफा, अर रुखियह, अल असास, अल वाफियह, अल काफियह| 7

1 देखिये मज्मू उल फतावा: 7/14

2 इर्सादुल अखल अस सलीम इला मिज़ाया अल किताबुल करीम लि अबी अस सौद

3 देखिये: अस सियासतुश शरैयह – इब्ने तैमियह रहिमहुल्लाह

4 इख्तेज़ा अस सिरातुल मुस्ताखीम लि इब्ने तैमियह

5 मज़ीद वज़ाहत के लिए देखिये: अल मन्हजियतु फी तलतल इल्मु लिस शेख सालेह आले अस शेख, मौखिफ अहले सुन्नह वल जमाह मिनल बदी वल अह्वाइ लिस शेख अर रूहैली

6 मज़ीद वज़ाहत के लिए देखिये: नमाज़े नबवी – dr शफीख उर रहमान

7 अल इत्खान फी उलूमिल कुरआन लिस सुयूती

बाज़ मौज़ूआत

1. अल्लाह की तारीफ़ व तौसीफ| (1-3)
2. अल्लाह ही इबादत के लायख है और दुआ भी इसी से तलब करनी चाहिए| (4)
3. मोमिनों की दुआ के सिरात ए मुस्तखीम पर चलना चाहते है और अल्लाह के ग़ज़ब से गुमराही में पड़ने से डरते है| (5-7)

बाज़ अस्बाख

1. सूरतुल फातिहा में दीन की असास का ज़िकर है, जिनकी मंदरजा ज़ेल दस नूकात से वज़ाहत होती है:
   1) तौहीद की तीन खिस्मों का ज़िकर:
      - तौहीद ए उलूहियत (अलहम्दुलिल्लाह)
      - तौहीद ए रुबूबियत (रब्बिल आलमीन)
      - तौहीद ए अस्मा व सिफात (अर रहमान अर रहीम) 8
2. अल्लाह की नेमतों पर शुक्र (अलहम्दुलिल्लाह)
3. इखलास (----------)
4. नेक सोहबत (----------)
5. दीन ए इस्लाम पर इस्तेखामत (----------)
6. दुआ की अहमियत (----------)
7. वहदत ए उम्मत (----------)
8. तारीख से सबख
9. अलाल्लाह, अयामुल्लाह, आयतुल्लाह, नेमुल्लाह पर घौर व फिकर
10. हख व बातिल में फर्ख व इम्तियाज़ ज़रूरी
    2) हर दिन नमाज़ में ये सूरत पढने से कम से कम दस मुआहिदे बन्दे को याद आ जाते है, जो उसने अल्लाह के साथ किये, जैसा के शेख अब्दुल रज्जाख अल बदर हफिज़हुल्लाह की किताब से पता चलता है के सूरह फातिहा दर असल मुआहिदा और वादा है| 9
    इस किताब के दस 10 मुआहिदे के बंद का खुलासा व मफहूम पेश ए खिदमत है:
    1. सिर्फ तौहीद रुबूबियत और तौहीद ए अस्मा व सिफात नजात के लिए काफी नहीं है, बलके तौहीद ए उलूहियत असल नजात का ज़रिया और मख्सद है| सारे नबियों और किताबों के नुज़ूल का मख्सद तौहीद ए उलूहियत ही है, यानी तौहीद इबादत| जैसा के अल्लाह ताला का इरशाद है: (----------) (अल अम्बिया:25) 10
    2. जब मेरा ये अखीदह है के मेरा पालनहार अल्लाह है तो फिर मुझे मायूस होने की ज़रुरत नहीं, यानी मख्लूख पर मुन्हसिर (depend) होकर मायूसी (dipression) का शिकार होने का कोई फाइदा नहीं| (------)
    3. हर दिन आखिरत को याद रखूंगा, ताके किसी पर ज़ुल्म करने और घफ्लत का शिकार होने से बचूं| (--------)
    4. मै अल्लाह का बंदा हूँ, यही मेरा हखीखी तार्रुफ़ है| (----------)
    5. सब से बड़ी दुआ हिदायत का माँगना है| हिदायत ए इरशाद और हिदायत ए तौफीख दोनों शामिल है| (----------)
    6. सूरतुल फातिहा की दूसरी आयत (----------) का अखीदा मेरे अन्दर जा, यानी उम्मीद पैदा करता है, जबके (----------) का अखीदा मेरे अन्दर खौफ पैदा करता है| जैसा के

मारूफ बाब है सहीह बुखारी में के: अल ईमान बैनल खौफ वर रिजा- ईमान खौफ और उम्मीद की दरमियान कैफियत का नाम है| 11

7. नेक लोगों के वाखियात से सबख लूँगा, नबी ﷺ और सहाबा इकराम के मुताबिख चलने का अहद करूंगा|
8. हर रोज़ सिरात ए मुस्तखीम की फिकर करूंगा|
9. इत्तेबा ए नबी ﷺ के ज़रिये अल्लाह का महबूब बनने की कोशिश करूंगा| यानी शिर्क व बिदत और इसी तरह सिरात ए मुस्तखीम से दूर ले जाने वाले सारी चीज़ों से बचूंगा|
10. तारीख में ना फरमानों के अंजाम से सबख लूँगा|

3) बर्रे सघीर में तौहीद ए अस्मा व सिफात के बाब में दो अहम् मसलों में कमज़ोरियों की इस्लाह पर तवज्जो देना ज़रूरी है:

1 अल्लाह कहाँ है?

- इसका सहीह जवाब ये है के अल्लाह की ज़ात अर्श पर है और इसका इल्म हर जगह है| (----------) ताहा 5 तरजुमा: रहमान अर्श पर मुस्तवी है| 12
- "अर रसाइल अस सबा" के हवाले के मुताबिख इमाम अबू हनीफा रहिमहुल्लाह ने यही अखीदह पेश किया है के अल्लाह की ज़ात अर्श पर है और उसका इल्म हर जगह है| और दीगर अयिम्माह का अखीदह भी यही है|
- अस्मा व सिफात में मुन्दरजा ज़ेल उसूलों का ख़याल रखा जाये: इब्न अबी ज़ैद अल खैरवानी रहिमहुल्लाह फरमाते है: वलहुल अस्मा उल हुसना व सिफातुल आला और इसी अल्लाह के लिए अस्मा ए हुसना और बुलंद सिफात है| 13
- इसी की शराह में शेख अब्दुल मुहसिन अल अब्बाद अल मदनी फरमाते है: अस्मा (नामों) और सिफात में से सिर्फ इसी का इसबात व इखरार करना चाहिए, जैसे अल्लाह ताला ने अपने लिए या इसके रसूल ने अल्लाह के लिए साबित खरार दिया है| वो सिफात जो अल्लाह ताला की शान के लायख है: ताविलात बातिलह, तक्यीफ (कैफियत के बारे में सवाल), तमसील (मख्लूख से मिसाल देना) के बघैर, तहरीफ़ (बदल देना), तातील (मुअत्तल खरार देने) से बचते हुए और हर ना ज़ेबा चीज़ से तंज़ियह (अरिउज़ ज़िम्मह और पाक होने) का अखीदह रखते हुए इखरार करना चाहिए| जैसा के इरशाद ए बारी ताला है (----------) तरजुमा: उस अल्लाह की मिस्ल कोई चीज़ नहीं और वो समी (सुनने वाला) बशीर (देखने वाला) है| (शूरा:11)
- अल्लाह ताला के नाम किसी (ख़ास) तेदाद में महसूर नहीं है, बलके इनमे से बाज़ नाम ऐसे है, जो अल्लाह ताला ने लोगों को बताये है और बाज़ को अपने इल्म घैब में रखा है| 14

2 तौहीद ए रुबूबियत असल मख्सद ए हयात नहीं, बलके तौहीद ए उलूहियत मख्सद ए हयात है व मख्सद ए बेअसत है| तौहीद ए रुबूबियत व अस्मा व सिफात को बुनियाद बना कर तौहीद ए उलूहियत का मुतालबा किया गया है|

4) इस सूरत को सूरह फातिहा कहना खुद इसकी फज़ीलत की अलामत है, क्यों के आग़ाज़ के लिए दूसरी सूरतों के मुखाबले में इसको तरजीह दी गयी|

5) अल्लाह वह्दहू ला शरीक ही तमाम इबादात का मुस्तहिख है| इबादात के नाम पर शिर्क और बिदात से बिल कुल्लिया इजतेनाब किया जाये|
6) सिरात ए मुस्तखीम पर साबित खदमी की दुआ हमेशा करते रहना चाहिए|
7) दुआ हमेशा तमाम के लिए करना चाहिए|
8) नमाज़ में इमाम जब सूरह फातिहा पढ़ ले तो मुखतदी भी आमीन कहे| क्यों के फ़रिश्ते भी आमीन कहते है| (सहीह बुखारी:6402)
9) देखिये: मदारिजुस सालिकीन लि इब्निल खय्यिम|
10) तफसील के लिए देखिये: मिन्हिदयात सूरतुल फातिहा-अब्दुल रज्ज़ाख अल बदर ल अब्बाद|
11) मन्हजुल अम्बिया फिल हिकमती वल अखल – अस शेख अल मुदकिली, अत तौहीद औला या दुआत, अस शेख अल्बानी|
12) मज्मूउल फतावा इब्ने तैमियह v 10 / p 63
13) उलूमुल्लाह अला खल्खिही – मूसा दुवेश, p;hd का रिसाला ज़रूर पढ़ें|
14) मुखद्दिमह इब्ने अबी ज़ैद अल खैरवनी माशरह: खतफ़ अलजनि उद दना:9p 82
15) मुसनद अहमद / 391 H 3712 इब्ने हजर ने इसे हसन और शेख अल्बानी ने अस सिल्सिलतुस सहीहा (198,199) में सहीह कहा है|

मुनासिबत / लतैफुत तफसीर

- सूरह फातिहा में (----------) का ज़िक्र है और सूरह बखरह की शुरुआत में (----------) का ज़िक्र है, जिस हिदायत का सूरह फातिहा में सवाल किया गया सूरह बखरह में वही हिदायत कुरआन की शकल में अता किये जाने का ज़िक्र है, यानी जो दुआ की गयी थी वो खबूल हो गयी|
- सूरह बखरह में मन्हज ए हिदायत का ज़िक्र भी है| (----------) (अल बखरह:137), इससे पता चलता है के इस्लाम समझने के लिए नबी और सहाबा का फहम ज़रूरी है|
- सूरह फातिहा के आखीर में मघ्जूब और ज़ाल्लीन के कलीमात का आने वाली सूरतों से बड़ा गहरा ताल्लुख है| (----------)
  - मघ्जूब: मिसाल के तौर पर यहूद – जिनका अक्सर तज़किरह सूरह बखरह और सूरह निसा में पाया जाता है|
  - ज़ाल्लीन: मिसाल के तौर पर नसारा – जिनका अक्सर तज़किरह सूरह इमरान और सूरह माइदा में पाया जाता है|

- सूरह फातिहा को शुरू में क्यों लाया गया? preamble (दस्तूर) की खानून में जो हैसियत होती है उससे कही ज़्यादा खवी हैसियत सूरह फातिहा की है|
- सूरह फातिहा पर तारीख में उलेमा ने काफी मेहनत की है और तवज्जो फरमाई है, मसलन: अबुल कलाम आज़ाद रहिमहुल्लाह ने इस सूरह की तफसीर में एक ज़कीम किताब “उम्मुल किताब” के नाम से मुरत्तब करदी| इसी तरह शेख अब्दुल रज्ज़ाख अल बदर अल अब्बाद रहिमहुल्लाह ने “मिन हिदायत सूरतुल फातिहा” के नाम से लिखी, इसी तरह इब्ने खय्यिम रहिमहुल्लाह ने “मदारिज उस सालिकीन” में

मुकम्मल एक जिल्द मुख्तस कर दी, इसी तरह इमाम सुयूती रहिमहुल्लाह ने सूरह फातिहा को "बरातुल इस्तेह्लाल" का एक उन्दह लखब दिया और मुस्तखिल किताब लिखी और साबित किया के सूरह फातिहा "उम्मुल किताब" कैसे है| हर मुतूल तफसीर में सूरतुल फातिहा पर एक जिल्द मुख्तस है|

- अरबी अशार में मुबरिज़त शारी की बड़ी अहमियत थी, आइये कुरआन ए मजीद की शुरूआत पर घौर करते है: अरब घोड़ों, खन्दरात, महल्लात और महबूबाओं की तारीफ करते थकते ना थे| लेकिन इसके बावजूद भी वो मख्लूख से खालिख की मारिफत तक पहुँचने में कामयाब ना हो सके| कुरआन ने शुरूआत में ही हखीखत का ज़िकर कर दिया के सारी मख्लूखात देखने के बाद (----------) क्यों नहीं कहते? यानी कुरआन में शुरू होते ही ये बता दिया गया के मख्लूखात पर तदब्बुर करते हुए खालिख का एतेराफ करना ही फितरत की मांग है|
- सबे मुअलखात के बारे में आता है के जो शायर सब से अच्छा वस्फ बयान करके लोगों की नज़रें अपने तरफ माइल कर लेता है, उसके अशार को काबा पर लटका दिया जाता, नतीजे में सबा मुअलखात वजूद में आ गए| लेकिन ज़रूरी नहीं के शायर जिस हुस्न की वजह से तारीफ़ कर रहा हो सब की मुश्तरिका दिल चस्पी का महवर हो, जबके कुरआन की शुरूआत से लेकर इख्तेताम तक जो भी ज़िक्र किया गया वो इंसान की फितरत की मांग और आवाज़ है|
- सूरह इखलास में अल्लाह ने नबी ﷺ के ज़रिये से "खुल" कह कर अपना तार्रुफ़ करवाया, जबके सूरह फातिहा में अल्लाह ने खुद अपना तार्रुफ़ पेश किया है, गोया के मख्लूख से रास्त (direct) अपना तार्रुफ़ हासिल करने का मुतालेबा किया है| शुरूआत में ये फितरत की अहम् मांग को अतम तरीखे से पेश किया गया है|
- जैसा के अरब के लोग जो घोड़ों और दीगर अश्या की खुसूसियत का एतेराफ करते थे, उन्हें पैघाम दिया जा रहा है के उन ख़ुसूसियात का बनाने वाला अल्लाह तुम्हारी तारीफ़ और इबादत का अकेला मुस्तहिख है| तौहीद ए रुबूबियत को ज़रिया बनाकर तौहीद ए उलूहियत की तरफ बुलाया गया|
- पुराने newton (अम्मुल खैस) और जदीद newton (अम्मुल खैस) और उनके मुत्ताबियीन ने वही ग़लती की के मख्लूख पर तदब्बुर करके खालिख की मारिफत और उलूहियत तक पहुँच ना सके| गिरते हुए सेब (apple) से ना दिखने वाली खुव्वत ए कशिश (gravity) को खाइल करवा दिया, लेकिन उस सेब (apple) और खुव्वत ए कशिश के पैदा करने वाले को भूल गए| इसी तरह घोड़ों के वस्फ में शबूर शायरों को घोड़ों के वस्फ याद रहे और कुछ रुबूबियत के पहलू याद रहे, लेकिन तौहीद ए खालिस (उलूहियत) को भूल गए|
- जो मुल्हिद व मुतवाखिफ (atheist & agnostic) खुदा के वजूब का इनकार या शक करते है, सूरतुल फातिहा में उन पर रद्द है, क्यों के मख्लूख पर घौर व फिकर करने से खालिख ए हखीखी की मारिफत होती है, उस अमल को ही मुकम्मिल तहखीख व इन्केशाफ (complete discovery) कहते है, जबके आज की science अधूरी तहखीख व इन्केशाफ (incomplete discovery) कर रही है और सिर्फ मख्लूख की तहखीख (discovery) में ही मगन है और वो खालिख के तार्रुफ़ की तहखीख व इन्केशाफ (discovery) ना कर सके|
  जिसने सूरज की शुआओं को गिरफ्तार किया, ज़िन्दगी की शब् ए तारीक सर ना कर सका|
- राखिमुल हुरूफ़ का एक दावती व इस्लाही तजरुबा ये है के दावत के मैदान में इस सूरत को और आयतल कुरसी को बहुत ही आसान तरीखे से मुअस्सर अंदाज़ में पेश किया जा सकता है| गुज़िश्ता दस सालों में tv channel पर मुख्तलिफ episodes के ज़रिये लाखों करोड़ों अफराद तक रब का पैघाम

पहुंचाने का अल्लाह ने मुझे मौखा दिया है और सूरतुल फातिहा और आयतल कुरसी के ज़रिये अखीदे की तस्हीह का मौखा अल्लाह ने इनायत फरमाया, alhamdulillah!

हिफ्ज़ व तदब्बुर आयात व हदीस बराए तज़कीर, तज़किया, दावत और इस्लाह

आयत: खाल ताला: (----------) (अल फातिहा:4)

तरजुमा: हम सिर्फ तेरी ही इबादत करते है और तुझ ही से मदद चाहते है|

हदीस: (----------) (सहीह बुखारी:6500)

तरजुमा: मुआज़ बिन जबल रज़िअल्लाहुअन्हु ने बयान किया के मै रसूलुल्लाह ﷺ की सवारी पर आप के पीछे बैठा हुआ था| सिवाए कजावा के आखरी हिस्से के मेरे और आप ﷺ के दरमियान कोई चीज़ हाइल नहीं थी – आप ﷺ ने फ़रमाया, ऐ मुआज़! मैं ने अर्ज़ किया, लब्बैक व सादैक, या रसूलुल्लाह! फिर थोड़ी देर आप ﷺ चलते रहे| फिर फरमाया, ऐ मुआज़! मै ने अर्ज़ किया, लब्बैक व सादैक, या रसूलुल्लाह! फिर थोड़ी देर मज़ीद आप ﷺ चलते रहे, फिर फरमाया, ऐ मुआज़! मै ने अर्ज़ किया लब्बैक व सादैक या रसूलुल्लाह! फरमाया तुम्हे मालूम है के अल्लाह का अपने बन्दों पर क्या हख है? मैंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है| फ़रमाया, अल्लाह का बन्दों पर ये हख है के वो अल्लाह ही की इबादत करे और उसके साथ किसी को शरीक ना ठहरायें| फिर आप ﷺ थोड़ी देर चलते रहे और फ़रमाया, ऐ मुआज़ बिन जबल! मै ने अर्ज़ किया, लब्बैक व सादैक या रसूलुल्लाह! फ़रमाया तुम्हे मालूम है के जब बन्दे ये कर ले तो उनका अल्लाह पर क्या हख है? मैंने अर्ज़ किया अल्लाह और उसके रसूल को ज़्यादा इल्म है| फ़रमाया के बन्दों का अल्लाह पर ये हख है के वो उन्हें अज़ाब ना दे|